MSW MANAGEMENT -Multidisciplinary, Scientific Work and Management Journal
ISSN: 1053-7899
Vol. 35 Issue 1, Jan-June 2025, Pages: 50-57

भारत – अफगानिस्तान संबंधः सम्भावनाएं एवं चुनौतियाँ

Dr kuldeep singh

Research supervisor
Sri Venkateshwara University, Gajraula, Amroha, Uttar Pradesh
Email id: drkuldeepsingh1977@gmail.com

Shailendra Singh Chauhan

Research scholar,
Sri Venkateshwara University, Gajraula, amroha, Uttar Pradesh
Email id: shailendra20172017@gmail.com

सार

भारत और अफ़गानिस्तान के बीच ऐतिहासिक रूप से समृद्ध और बहुआयामी संबंध हैं, जो सांस्कृतिक, आर्थिक और रणनीतिक संबंधों से आकार लेते हैं। पिछले कुछ वर्षों में, भारत बुनियादी ढांचे, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और क्षमता निर्माण पहलों में निवेश करके अफ़गानिस्तान के लिए एक प्रमुख विकास भागीदार के रूप में उभरा है। हालाँकि, अफ़गानिस्तान के राजनीतिक परिदृश्य, विशेष रूप से 2021 में तालिबान के सत्ता में लौटने के बाद, द्विपक्षीय जुड़ाव के लिए नई चुनौतियाँ पेश की हैं। यह अध्ययन भारत–अफ़गानिस्तान संबंधों में संभावनाओं और चुनौतियों का पता लगाता है, भारत के रणनीतिक हितों, कूटनीतिक दृष्टिकोणों और आर्थिक निवेशों का विश्लेषण करता है। संभावनाओं में मानवीय सहायता, व्यापार और चाबहार बंदरगाह जैसी क्षेत्रीय संपर्क परियोजनाओं में संभावित सहयोग शामिल हैं। हालाँकि, सुरक्षा चिंताएँ, राजनीतिक अस्थिरता और तालिबान शासन की अनिश्चित मान्यता जैसी चुनौतियाँ जुड़ाव को जटिल बनाती हैं। यह शोधपत्र अफ़गानिस्तान के भविष्य को आकार देने में चीन और पाकिस्तान के भू–राजनीतिक प्रभावों और भारत की रणनीतिक गणनाओं पर उनके प्रभाव का भी आकलन करता है। पिछले जुड़ावों और संभावित भविष्य के रास्तों की जाँच करके, यह शोधपत्र इस बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि भारत अपने क्षेत्रीय हितों की रक्षा करते हुए और स्थिरता को बढ़ावा देते हुए अफ़गानिस्तान में विकसित स्थिति को कैसे नेविगेट कर सकता है।

मुख्य शब्दः *भारत, अफगानिस्तान, संबंध, चुनौतियाँ*

प्रस्तावना

भारत और अफ़गानिस्तान का एक लंबा इतिहास रहा है। किसी भी अन्य सभ्यता से ज़्यादा, वहाँ भारतीय संस्कृति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। भारत–अफ़गानिस्तान संबंधों के ऐतिहासिक प्रमाण बल्ख के खंडहरों, बामियान में बुद्ध की विशाल प्रतिमा, कनिष्क और कुषाण सम्राटों के सिक्के, प्रस्तरखंड, नगरम के मेहराब, काबुल में बाबर के मकबरे और असमाई के मंदिर में पाए जा सकते हैं। इन संबंधों की मज़बूती दर्शाती है कि भारत–अफ़गानिस्तान की दोस्ती कितनी पुरानी है। अफ़गानिस्तान में चल रहे रूसी हस्तक्षेप के कारण, ब्रिटिश भारत में भारत और अफ़गानिस्तान के बीच संबंधों में कई उतार–चढ़ाव आए। स्वतंत्रता के बाद, दोनों देशों के बीच संबंधों में सुधार होने लगा, लेकिन अमेरिका और यूएसएसआर के बीच शीत युद्ध के संकट ने भारत–अफ़गानिस्तान संबंधों पर छाया डाली। भारत अफ़गानिस्तान के साथ तटस्थ संबंध स्थापित

MSW MANAGEMENT -Multidisciplinary, Scientific Work and Management Journal
ISSN: 1053-7899
Vol. 35 Issue 1, Jan-June 2025, Pages: 50-57

करने का इच्छुक था क्योंकि देश शीत युद्ध के दौरान अमेरिकी–सोवियत संघर्ष से पीड़ित था। दूसरे शब्दों में, भारत किसी भी महाशक्ति को तरजीह नहीं देता था। दोनों महाशक्तियों के बीच प्रतिद्वंद्विता ने मध्य एशिया में अशांति पैदा कर दी। अफ़गानिस्तान में पूर्ण हस्तक्षेप करने के अलावा, सोवियत संघ ने अप्रत्यक्ष रूप से वहाँ की सरकार को प्रभावित करना भी शुरू कर दिया। भारत ने अफ़गानिस्तान के साथ संबंध बनाए क्योंकि उसका मानना था कि इस मामले में उसका राष्ट्रीय हित सबसे पहले आता है। शीत युद्ध के दौरान, भारत का सोवियत संघ की ओर अप्रत्यक्ष झुकाव था। परिणामस्वरूप, भारत अफ़गान मुद्दे पर तटस्थ रहकर दोनों देशों के साथ अपने संबंध बनाए रखता है। सोवियत संघ के हटने के बाद अमेरिका द्वारा प्रायोजित तालिबान अफ़गानिस्तान का नेतृत्व संभालने में सक्षम हो गया। परिणामस्वरूप, तालिबान 1996 से 2001 तक सत्ता पर अपनी पकड़ मजबूत करने में सक्षम रहा। चूँकि उस समय तालिबान सरकार पाकिस्तान की ओर झुकी हुई थी, इसलिए भारत और अफ़गानिस्तान के बीच संबंध अनुकूल नहीं थे।

संयोगवश 11 सितम्बर 2001 की घटना ने तालिबान शासन पर प्रश्न चिन्ह खड़ा कर दिया। अमरीका के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर हमले की जिम्मेदारी आतंकी संगठन अलकायदा और तालिबानी दोनों ने लिया। संयुक्त राज्य अमेरिका ने तालिबान के विरूद्ध श्ऑपरेशन एन्डयोरिंग फ्रीडमश आरम्भ किया जिसका समर्थन अफगानिस्तान कक उत्तरी गठबन्धन और भारत ने किया। जिसके फलस्वरूप तालिबानी सरकार का पतन होना शुरू हो गया। इसी समय संयुक्त राष्ट्र संघ के नेतृत्व में जर्मनी के शहर बॉन में अफगान गुटों का सम्मेलन हुआ जिसे श्बॉन समझौताश के नाम से जाना जाता है और इसी समझौते के अंतर्गत अफगानिस्तान में एक अंतरिम प्रशासन का निर्माण किया गया जिसमें भारत की भूमिका महत्वपूर्ण थी। इस अंतरिम सरकार के अध्यक्ष हामिद करजई हुए। 2001 से अफगानिस्तान ने बहुत लम्बा सफर तय किया है। भारत इस सफर में अफगानिस्तान के साथ आधारभूत संरचना के निर्माण से लेकर संसद के निर्माण तक अपनी भूमिका अदा कर रहा है। इसके अतिरिक्त शिक्षा के क्षेत्र, ऊर्जा के क्षेत्र तथा सैन्य क्षेत्र जैसे अनेक आयामों में सहयोग प्रदान कर रहा है। जिसके फलस्वरूप भारत को अफगानिस्तान की स्थिरता में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इस शोध पत्र में भारत–अफगानिस्तान के बीच संबंध कैसे बेहतर हों उन्हीं चुनौतियों और संभावनाओं का उल्लेख किया गया है।'

इस शोध पत्र में भारत–अफगानिस्तान के बीच भविष्य में बेहतर संबंध कैसे हों, उसी को सारगर्भित ढंग से समझने का प्रयत्न किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में ऐतिहासिक, विवरणात्मक एवं विष्लेषणात्मक अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है। आज भारत के लिए अफगानिस्तान के संदर्भ में स्थायित्व का प्रश्नचिन्ह सबसे बड़ी चुनौती के रूप में दिखाई दे रहा है। इस कारण से भारत को गंभीरतापूर्वक अफगानिस्तान की जमीनी हकीकत को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। चुनौतियों की श्रृंखला क्रम में सर्वप्रथम अफगान राजतंत्र का पुनर्गठन करना चाहिए ताकि आम लोगों की सहभागिता बढ़े तथा स्वयं को अफगानिस्तान सरकार का भाग समझे। वर्तमान में अफगानिस्तान में एक केन्द्रीकृत शासन व्यवस्था है जिसके तहत प्रत्येक पांच वर्ष में राष्ट्रपति का चुनाव किया जाता है और उन्हीं के द्वारा देश के 34 प्रान्तीय गवर्नरों का चुनाव किया जाता है। इस व्यवस्था के कारण स्थानीय लोग अपने नेता का चुनाव नहीं कर पाते हैं। इस वजह से लोगों का जुड़ाव सरकार के साथ प्रत्यक्ष रूप से नहीं हो पाता है। अफगानिस्तान के स्थायित्व में यह एक बाधा के रूप में दिखाई देती है

MSW MANAGEMENT -Multidisciplinary, Scientific Work and Management Journal
ISSN: 1053-7899
Vol. 35 Issue 1, Jan-June 2025, Pages: 50-57

इसलिए केन्द्रीयकृत शासन व्यवस्था के स्थान पर धीरे–धीरे विकेन्द्रीकृत शासन व्यवस्था की ओर अग्रसारित कराने में भारत को महत्वपूर्ण भूमिका अपनानी चाहिए। भारत विश्व समुदाय के देशों की तुलना में सर्वव्यापक तौर पर विविध समूहों का प्रतिनिधित्व करता है, तब भी वहां स्थायित्व बनी हुई है। इसका कारण कहीं न कहीं शासन व्यवस्था में संसदीय लोकतंत्र की प्रणाली को जाता है। इसके साथ ही अफगानिस्तान के पड़ोसी देश पाकिस्तान में भी संसदीय लोकतन्त्र की प्रणाली को अपनाया गया है, जो कहीं न कहीं स्थायित्व का कारण है। इस वजह से अफगानिस्तान को भी अध्यक्षात्मक से संसदात्मक लोकतन्त्र की तरफ झुकाव करना चाहिए। विविधतापूर्ण समाज का नेतृत्व भारत ने जिस योग्यतापूर्वक ढंग से निवर्हन कर रहा है, यही सीख भारत को अफगानिस्तान की राजनीतिक प्रणाली को अधिक समावेशी बनाने में मदद करनी चाहिए। साथ ही साथ उसके संविधान में आवश्यक बदलाव करने के लिए राजनीतिक नेतृत्व को शिक्षित करने का प्रयत्न भी करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, संसदीय लोकतन्त्र जातीय विभाजन की समस्या को भी हल करने में अफगानिस्तान की मदद करेगा। वर्तमान राष्ट्रपति किसी एक जातीय समूह का होता है और बाकी के जातीय समूह यह महसूस करते हैं कि उन्हें राजनीतिक और सामाजिक प्रक्रिया से बाहर कर दिया गया है। ऐसी मानसिकता में परिवर्तन तब होगा जब सभी जातीय समूहों का उचित प्रतिनिधित्व संसदीय लोकतंत्र में होगा। इस प्रकार का लोकतंत्र विधि–शासन को मजबूत बनाने में और विभाजित आबादी के मतभेदों को मिलाकर उन्हें एकजुट करने में मदद करेगा।

भारत–अफगानिस्तान के मध्य बेहतर संबंध बनने में दूसरी चुनौती अफनानिस्तान का अशान्त होना है। भारत को अपने सूचना तन्त्र के माध्यम से शान्ति बनाने के सभी आयामों को लागू करने का प्रयत्न करना चाहिए। भारत अफगानिस्तान में सैन्य सहायता के साथ–साथ आर्थिक विकास पर सुनियोजित व सुव्यवस्थित ढंग से अवसर उपलब्ध करा सकता है। इसके साथ ही साथ वहां के जो जातीय समूह विकास की धारा में असहयोग प्रदान कर रहे हैं, उनके बीच मध्यस्थता करके उनको विकास की मुख्य धारा में योगदान करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। उनको इस बात का भरोसा दिलाना चाहिए कि बिना शान्ति के अफगानिस्तान के विभिन्न जातीय समूहों का विकास नहीं हो सकता। इस प्रकार भारत शान्ति बनाने के विविध आयामों में नेतृत्व प्रदान कर सकता है। भारत द्वारा किया गया हस्तक्षेप उसकी क्षेत्रीय विशिष्टता को बढ़ाएगा तथा इस क्षेत्र की भू–राजनीति और भू–अर्थव्यवस्था में उसके लिए जगह भी बनायेगा।'

दोनों देशों के बीच बेहतर संबंध स्थापित करने में एक बड़ा बाधक तालिबान की समस्या है। तालिबान अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण में अपनी भूमिका का उल्लेख निष्पक्ष रूप में नहीं कर रहा है, जिससे लोगों के मन में संदेह का भय व्याप्त है। भारत को तालिबान के साथ दो ढंग से निपटने का प्रयत्न करना चाहिए। एक तो अफगानिस्तान की जनता का विश्वास हासिल करके, दूसरा स्थानीय सैन्य सहायता के माध्यम से तालिबानी समस्या का समाधान खोजा जा सकता है। इसके पीछे कारण यह है कि तालिबानी शासन से भी लोग खतरनाक ढंग से आहत हुए थे। इसलिए समय की जरूरत यही है कि उन्हें इस ढंग से पहचाना और वर्गीकृत किया जाय, ताकि सुलह और जहां कहीं भी आवश्यक हो बल द्वारा शान्ति के लिए उपयुक्त दृष्टिकोण तैयार किया जा सकें।'

भारत के पास आंतरिक और वाह्य इंटेलिजेंस का एक बड़ा नेटवर्क है, जिसका उपयोग अफगानिस्तान सरकार के साथ संदिग्ध तालिबानी की समस्या में कर सकता है। इससे फायदा

MSW MANAGEMENT -Multidisciplinary, Scientific Work and Management Journal
ISSN: 1053-7899
Vol. 35 Issue 1, Jan-June 2025, Pages: 50-57

यह होगा कि तालिबान की संदिग्ध भूमिका का पर्दाफाश होगा तथा वैश्विक स्तर पर भारत की कुशलता से लोगों का विश्वास बढ़ेगा। बुद्ध, महावीर और गांधी की यह भूमि यदि अपने पड़ोस में शान्ति प्रक्रिया में उपाय करने में नाकाम रहती है तो यह देश एक दुर्लभ अवसर गवां देगा। वह भी खासतौर से इस हकीकत को देखते हुए कि इस दिशा में भी चीन भारत से कही आगे है।'

भारत–अफगानिस्तान के बीच बेहतर संबंध स्थापित करने में भू–राजनीतिक अनिवार्यताओं का भी महत्व है। इस भू–राजनीतिक अनिवार्यता में पाकिस्तान के माध्यम से अफगानिस्तान में शान्ति स्थापित की जा सकती है। पाकिस्तान को नजरअंदाज करके अफगानिस्तान में शान्ति स्थापित करना एक दुर्लभ कार्य है। पाकिस्तान अपने आप में आतंकवाद को उत्पन्न करने की एक प्रकार से मैन्यूफैक्चरिंग इंडस्ट्री है, जिसका एक्सपोर्ट वह आये दिन करता रहता है। इस समस्या का समाधान भारत पाकिस्तान की प्रादेशिक असुरक्षा और उसके सामरिक हित का आश्वासन देकर किया जा सकता है। इसके साथ ही साथ एशिया महाद्वीप के ताकतवर देश जैसे भारत, चीन, रूस की भी साझी समस्या आतंकवाद है, जिसकी जड़ें पाकिस्तान में दिखती हैं। उदाहरण के रूप में चेचन्या रूस की कमजोरी, झिनझियांग चीन की कमजोरी, उसी तरह कश्मीर भारत की कमजोरी है? जो आतंकवाद की समस्या से ग्रसित है। इसलिए ऐसी स्थिति का निपटारा राजनीतिक, कूटनीतिक और सैन्य निवेश के जरिए संगठन बनाकर की जा सकती है।"

अफगानिस्तान में शान्ति स्थापित करने की दिशा में भारत, चीन, रूस, पाकिस्तान को मिलाकर संयुक्त प्रयास करने की आवश्यकता है अन्यथा वे दिन दूर नहीं कि इस्लामिक स्टेट (आई०एस०) जैसे आतंकवादी संगठनों का वर्चस्व हो जाय, तब समस्या का निराकरण करने में असुविधा होगी। साझा सूचनातन्त्र के माध्यम से संगठित होकर अधिकांश रूप में आतंकवाद की समस्या का निदान किया जा सकता है। भारतीय इंटेलिजेंस एजेंसियों ने यह स्वीकार किया है कि इस क्षेत्र में आई०एस० का उभरना देश की सुरक्षा पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करता है।"

आई०एस० की समस्या से ईरान व मध्य एशिया का भी महत्व बढ़ जाता है। तालिबान के लड़ाकों का आई०एस० से सम्पर्क होना भारत के लिए बहुत बड़ा खतरा होगा और उसकी सुरक्षा प्रभावित होगी। इसलिए भारत, ईरान व मध्य एशिया के देशों के साथ मिलकर उपयुक्त तरीके और तन्त्र विकसित कर निरन्तर सुसंगत और दीर्घकालीन प्रयास के द्वारा तालिबानियों के अर्थव्यवस्था को धूमिल करके समाधान ढूढ़ा जा सकता है।

भारत के द्वारा एक प्रयास यह भी किया जा सकता है कि तालिबान को राजनीतिक पार्टी में परिवर्तित कराकर और विभिन्न पदों के लिए अफगानिस्तान के चुनावों में शिरकत कर अफगानिस्तान की राजनीति की मुख्य धारा में लौटाना चाहिए। तालिबान को अवाम के साथ मिलकर अपनी सत्ता को वैधता प्रदान करना चाहिए ताकि लोगों का विश्वास बढ़े। इससे अपनी खराब छवि को सुधारने का अवसर मिल जायेगा और लोगों का विश्वास भी बढ़ जायेगा।

अफगानिस्तान में शान्ति की राह लम्बी और कठिन दिखाई देती है लेकिन एक बार गति मिलने पर भारत को फायदा और सिर्फ फायदा होगा। इसलिए यह भारतीय नीति निर्माताओं पर निर्भर है कि वे इस क्षेत्र में अपने को एक अवसर के रूप में देखे न कि संदेह की दृष्टि से।

भारत–अफगानिस्तान की चुनौतियों में से एक चुनौती भ्रष्टाचार की समस्या अफगानिस्तान में विद्यमान है। भारत को इस समस्या का समाधान वहां की सूचनातन्त्र के साथ सहभागी रूप में कर सकता है। अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण में जिस तन्मयता के साथ भारत अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहा है, उसमें भ्रष्टाचार अपने आप में एक बहुत बड़ी बाधा है। भारत इस तरह से

MSW MANAGEMENT -Multidisciplinary, Scientific Work and Management Journal
ISSN: 1053-7899
Vol. 35 Issue 1, Jan-June 2025, Pages: 50-57

साधन और तन्त्र विकसित कर सकता है, जिससे भारत द्वारा अफगानिस्तान में निवेश किया हुआ धन किसी भी तरीके से गलत हाथों में न पड़े और न ही भ्रष्टाचार का शिकार हो। भ्रष्टाचार का कम होना, निवेश का बढ़ाना आपस में जुड़े हुए हैं।"

भारत–अफगानिस्तान के बीच बेहतर संबंध संचालित करने में चीन एक अवसर और चुनौती दोनों रूपों में भूमिका अदा कर रहा है। अमेरिका द्वारा सैन्य की वापसी से चीन का अवसरवादी दृष्टिकोण भारत को चिन्तित कर रहा है। अफगानिस्तान में चीन शान्तिपूर्ण दिशा में कदम उठा रहा है जैसे अफगान सरकार और तालिबान के बीच शान्ति वार्ता को आयोजित कराने का प्रयास जारी है ताकि पश्चिम एशिया के बाजारों तक पहुंच आसान हो सके। भारत को रेशम मार्ग को अवसर के रूप में देखना चाहिए, न कि चुनौतियों के रूप में? भारत को अपनी उदारता तथा गांधीवादी मूल्यों को अपनाते हुए अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण में निःस्वार्थ भाव से योगदान करना चाहिए। इसका लाभ यह होगा कि अफगानिस्तान की जनता भारत और चीन के आर्थिक विकास के मॉडल की तुलना करेगी और उनको यह मालूम होगा कि कौन देश हमारे साथ दीर्घकालिक रूप से बिना स्वार्थ के जुड़ा है।[8] विदेश नीति में यह देखा जाता है कि किस देश के साथ अपने राष्ट्रीय हित को अधिकांश रूप में पूरा कैसे हो, उसी को महत्व दिया जाता है। अफगानिस्तान की जनता का विश्वास भारत को दीर्घकालिक रूप्से आपसी संबंध में मजबूती प्रदान करेगा।

यद्यपि, देखा जाय तो पाकिस्तान के साथ चीन अपनी स्थिति का लाभ उठा सकता है, जोकि अफगानिस्तान में शान्ति की कुंजी है। इसलिए, हर तरह से चीन के द्वारा शान्ति सीमित करने की दिशा में अफगान सरकार और तालिबान के बीच वार्ता को फास्ट ट्रेक पर लाने के लिए सार्थक प्रयास किया जा रहा है। भारत को अफगानिस्तान में शान्ति स्थापित करने में चीन को एक अवसर के रूप में देखना चाहिए। अफगानिस्तान में चीन का हस्तक्षेप बढ़ जाने से भारत को अपनी विदेश नीति का विस्तार से निरीक्षण करने की जरूरत है ताकि अपनी भूमिका को अनवरत प्रासंगिक बनाया जा सके।"

प्राचीन और मध्यकालीन संबंध

भारत और अफ़गानिस्तान के बीच संबंधों का पता सिंधु घाटी सभ्यता से लगाया जा सकता है, जहाँ दोनों क्षेत्रों के बीच व्यापारिक संबंध स्थापित हुए थे। सम्राट अशोक के अधीन मौर्य काल के दौरान भारत से अफ़गानिस्तान तक बौद्ध धर्म के प्रसार ने सांस्कृतिक आदान–प्रदान को मज़बूत किया। मध्यकालीन काल के दौरान, अफ़गानिस्तान ने ग़ज़नवी, गुरी और मुगलों सहित विभिन्न आक्रमणकारियों के लिए प्रवेश द्वार के रूप में काम किया, जिन्होंने भारतीय इतिहास पर एक अमिट छाप छोड़ी। संघर्ष के दौर के बावजूद, सांस्कृतिक और आर्थिक संपर्क फले–फूले, सिल्क रोड जैसे व्यापार मार्गों ने वाणिज्य को सुविधाजनक बनाया।

औपनिवेशिक और स्वतंत्रता–पश्चात संबंध

भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दौरान, अफ़गानिस्तान को ब्रिटिश भारत और रूसी साम्राज्य के बीच एक रणनीतिक बफर राज्य माना जाता था। एंग्लो–अफ़गान युद्धों (19वीं सदी) ने अफ़गानिस्तान की विदेश नीति और भारत के साथ उसके संबंधों को आकार दिया। 1947 में भारत की आज़ादी के बाद, क्षेत्रीय स्थिरता और आर्थिक सहयोग में साझा हितों से दोनों देशों के बीच संबंध मज़बूत हुए। भारत ने अफ़गानिस्तान की संप्रभुता और विकास का समर्थन किया, शीत युद्ध की प्रतिद्वंद्विता से खुद को दूर रखा और कूटनीतिक जुड़ाव को बढ़ावा दिया।

MSW MANAGEMENT -Multidisciplinary, Scientific Work and Management Journal
ISSN: 1053-7899
Vol. 35 Issue 1, Jan-June 2025, Pages: 50-57

महत्व

अफगानिस्तान भारत की मध्य एशिया रणनीति के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वह उस बंदरगाह विहीन देशों को क्नेक्टिविटी प्रदान करता है। अफगानिस्तान अपनी छवि को बदलना चाहता है। वह चाहता है कि आर्थिक विकास के द्वारा यहाँ के लोगों को ज्यादा से ज्यादा रोजगार मिले तथा प्राकृतिक संसाधनों के द्वारा अपनी पहुंच का विस्तार वैश्विक पूंजी के रूप में भी चाहता है। इसके साथ ही साथ उसका मानना है कि स्कूलों, अस्पतालों, शैक्षिक एवं अन्य बुनियादी सामाजिक विकास संस्थानों का विकास अफगानिस्तान के लोगों को वैकल्पिक अवसर भी प्रदान करेगा। दशकों से युद्ध का शिकार अफगान समाज को पुनरूद्धार की अत्यधिक आवश्यकता है जिसके लिए उसे जबरदस्त निवेश की जरूरत है। अफगानिस्तान में स्थापित आधारभूत संरचना का व्यापक अभाव है। जिसके फलस्वरूप अन्य क्षेत्रों में भी रोजगार का अभाव है। दूसरी ओर ग्रामीण इलाकों में रहने वाले लोग तालिबान से सहानुभूति रखते हैं और अफगान सरकार पर यह खतरा मंडराता रहता है कि कहीं ये तालिबान की आक्रामकता का शिकार न हो जाय जिससे व्यवस्था को चुनौती देने लगे। इन कारणों से अफगानिस्तान कहीं न कहीं पाकिस्तान के साथ मिलकर अपने विकास व आतंकवाद के खिलाफ युद्ध में भागीदार बनाने में दिलचस्पी रखता है। भारत को भी अफगानिस्तान को साथ मिलकर आतंकवाद के खिलाफ युद्ध में सफल योगदान का निर्वहन करना चाहिए।"

इसके अतिरिक्त भारत को अफगानिस्तान में चीन की भूमिका को सकारात्मक रूप में देखना चाहिए क्योंकि भारत–अफगानिस्तान का संबंध बहुत पुराना है जिससे हमें वह शंका की दृष्टि से नहीं देखेगा। चीन का हित अफगानिस्तान में केवल आर्थिक है। इसलिए भारत को चिंता नहीं करनी चाहिए कि अफानिस्तान और पाकिस्तान दोनों में चीन की बढ़ती व्यापकता के साथ उसकी सुरक्षा चिंताओं पर असर पड़ेगा। चीन यह कभी नहीं चाहेगा कि भारत अमेरिका की ओर ज्यादा झुके, इसलिए वह भारत को इस क्षेत्र के साथ–साथ अफगानिस्तान में काम करने का पर्याप्त स्थान प्रदान करेगा।

इस प्रकार भारत को दक्षिण एशियाई आर्थिक परिदृश्य से चीन के हस्तक्षेप से भयभीत नहीं होना चाहिए। बल्कि भारत को अपनी श्सॉफ्टपॉवरश कूटनीति के विस्तार पर विशेष बल के साथ अपनी भूमिका को पुर्नभाषित करने की जरूरत है। भारत के पास तालिबान को समझौते की दिशा में लाने का एक अवसर है क्योंकि कहीं न कहीं यह माना जा सकता है कि दक्षिण एशियाई क्षेत्र में आई० एस० आई० एस० की वृद्धि और जोखिम को नियंत्रित करने में वह भारत की मदद करेगा।[8] तालिबान के साथ शान्ति वार्ता में मध्यस्थता करने के लिए भारत को चीन, पाकिस्तान तथा अन्य इच्छुक देशों के साथ भागीदारी करनी चाहिए। चीन इस दिशा में कदम उठा रहा है और अगर भारत इस क्षेत्र में भू–राजनीतिक और सामरिक विकास को नजरअंदाज करता है तो वह मौका गवां सकता है। इसलिए भारत को श्वेट एण्ड वॉचश की नीति का त्यागकर, इसे एक अवसर के रूप में स्वीकार कर अपनी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

MSW MANAGEMENT -Multidisciplinary, Scientific Work and Management Journal
ISSN: 1053-7899
Vol. 35 Issue 1, Jan-June 2025, Pages: 50-57

निष्कर्ष

भारत–अफ़गानिस्तान संबंधों को ऐतिहासिक रूप से मज़बूत कूटनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों द्वारा चिह्नित किया गया है। अफ़गानिस्तान में बुनियादी ढांचे, शिक्षा और मानवीय सहायता में इसके व्यापक योगदान के माध्यम से एक प्रमुख विकास भागीदार के रूप में भारत की भूमिका स्पष्ट है। हालाँकि, 2021 में तालिबान की वापसी ने इस रिश्ते की गतिशीलता को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया है, जिससे भारत के लिए नई कूटनीतिक और रणनीतिक चुनौतियाँ सामने आई हैं। राजनीतिक अनिश्चितता के बावजूद, भारत मानवीय सहायता और सीमित कूटनीतिक पहुँच के माध्यम से अफ़गानिस्तान के साथ जुड़ना जारी रखता है, जो अफ़गान लोगों के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हालाँकि, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ, पाकिस्तान और चीन जैसे क्षेत्रीय अभिनेताओं का प्रभाव और मान्यता प्राप्त सरकार की कमी गहन जुड़ाव में महत्वपूर्ण बाधाएँ खड़ी करती हैं। आगे बढ़ते हुए, अफ़गानिस्तान के प्रति भारत के दृष्टिकोण को रणनीतिक हितों और मानवीय प्रतिबद्धताओं के बीच एक नाजुक संतुलन की आवश्यकता होगी। चाबहार बंदरगाह जैसी पहलों के माध्यम से क्षेत्रीय संपर्क को मजबूत करना, सांस्कृतिक कूटनीति के माध्यम से जुड़ाव बनाए रखना और एक व्यावहारिक विदेश नीति अपनाना द्विपक्षीय संबंधों को बनाए रखने की कुंजी होगी। यद्यपि चुनौतियां बनी हुई हैं, भारत की ऐतिहासिक सद्भावना और विकासोन्मुख दृष्टिकोण भविष्य के सहयोग के लिए आधार प्रदान करता है, तथा यह सुनिश्चित करता है कि अफगानिस्तान में इसकी उपस्थिति उभरते भू–राजनीतिक परिदृश्य में प्रासंगिक बनी रहे।

MSW MANAGEMENT -Multidisciplinary, Scientific Work and Management Journal
ISSN: 1053-7899
Vol. 35 Issue 1, Jan-June 2025, Pages: 50-57

संदर्भ सूची

1ण राव, प्रदीप सिंह, श्अफगानिस्तान समस्या भारतीय विदेशनीति के संदर्भ मेंश, प्रिन्टवैल पब्लिशिंग, जयपुर, 1997, पृ० सं0 03
2ण वही पृ० सं० 05
3ण वही पृ० सं० 94
4ण बिस्वाल, तपन, श्अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, ओरियंट ब्लैक स्वॉन, प्राइवेट लिमिटेड, नईदिल्ली, 2016, पृ० सं० 187
5ण वही पृ० सं० 190
6ण वही पृ० सं० 229
7ण सीकरी, राजीव, श्भारत की विदेशनीति चुनौती और रणनीतिश, सेज पब्लिकेशन इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2017, पृ० सं० 52–53
8ण वही पृ० सं० 56–57
9ण वही पृ० सं० 218–219
10ण जैन, बी०एम०, श्अन्तर्राष्ट्रीय संबंधश, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, 2007, पृ० सं० 341–342
11ण वही पृ० सं० 346–347
12ण वैदिक, डॉ० वेदप्रताप, श्अफगानिस्तान में सोवियत अमरीकी प्रतिस्पर्धाश, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, 1973, पृ० सं० 7–8
13ण पंत, पुष्पेश, '21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय संबंधश, टाटा मैकग्राहिल एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नईदिल्ली, 2014,पृ० सं० प्ट 19–20
14ण वैदिक, डॉ० वेदप्रताप, श्अफगानिस्तान कल, आज और कलश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2002, पृ० सं० 108–109
15ण गुप्ता, आलोक कुमार, श्भारत–अफगानिस्तान संबंध बदलती गति और नए अवसरश, वर्ल्ड फोकस, अंक 43 अक्टूबर 2015, पृ० सं० 30–31
16ण अहमद, डॉ० सलीम, श्अफगानिस्तान के प्रति पाकिस्तान की नीतिरू भारत से चुनौतियां, वर्ल्ड फोकस, अंक 68, नवम्बर 2017, पृ० सं० 72–73